मधुबन-6

1. फूल और काँटा

पाठ-बोध

1. (क) (i) बादल (ख) (iv) कपड़े (ग) (i) चाँद
(घ) (iv) 'हरिऔध' (ङ) (iii) काँटा।

2. फूल **लेकर तितलियों को गोद में**
भौंर को अपना अनूठा रस पिला,
निज सुगंधों 'औ' निराले रंग से
है सदा देता कली जी की खिला।
है **खटकता एक सबकी आँखों में**
दूसरा है सोहता सुर-शीश पर,
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

3. (क) फूलों और काँटों पर एकसमान बादल बरसते हैं।
(ख) हर किसी के ढंग अलग-अलग होते हैं, क्योंकि फूल हर किसी को खुशबू देता है, और काँटा सबकी आँख में खटकता है।
(ग) काँटों और फूलों पर एकसमान हवा इसलिए बहती है, क्योंकि दोनों को पालने वाला एक ही पेड़ होता है।
(घ) एक डाली पर लगने के बावजूद दोनों का स्वभाव अलग-अलग होता है। एक खुशबू देता है और दूसरा खटकता है।

4. (क) फूल और काँटे में यह समानता है कि दोनों एक ही जगह जन्म लेते हैं और एक ही पौधा उन्हें पालता है।
(ख) काँटे का स्वभाव छेदने का होता है, किसी की उँगलियों में चुभता है तथा किसी के अच्छे कपड़े फाड़ देता है।
(ग) फूल तितलियों को अपनी गोद में लेकर उन्हें रस पिलाता है। फूल देवताओं के सिर पर सजाया जाता है।
(घ) फूल अपनी खुशबू से और अनोखे रस से हर किसी के मन को प्रफुल्लित कर देता है।
(ङ) इस कविता के माध्यम से कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि अच्छे कुल में जन्म लेने से व्यक्ति अच्छा ही होगा, यह आवश्यक नहीं है।

5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓।

भाषा-बोध

6. मेघ = **बादल, जलद**। रात = **रात्रि, निशा**। चाँदनी = **कौमुदी, चंद्रिका**।
आँख = **नयन, चक्षु**। सुर = **देव, आदित्य**। हवा = **पवन, वायु**।

7. चमकता चाँद, श्याम तन, अनूठा रस,
निराला रंग, निज सुगंध, सुर शीश।

8. **श्याम** = साँवला—राहुल साँवले रंग का लड़का है।
कृष्ण—कृष्ण भगवान ने कंस का संहार किया।
छेद = छिद्र—बर्तन में छिद्र है।
बिल—साँप बिल से बाहर आया।
कुल = परिवार—मोहन राम के परिवार से है।
समूह—10 लोगों का समूह है।

9. **चाँद का टुकड़ा**—राधा कृष्ण के लिए चाँद का टुकड़ा हैं।
आँख में खटकना—कुछ लोगों की आँखों में यह रकम खटक गई।
दिल की कली खिलना—फूल और काँटा कविता को पढ़कर मेरे दिल की कली खिल गई।

10. आकाश में रात्रि में फैलने वाली रोशनी—**चाँदनी**
एक पौधा जिसमें अनेक काँटे होते हैं—**गुलाब**
फूलों पर मँड़राने वाला कीट—**तितली**
ईश्वर को चढ़ाने वाला भोज्य पदार्थ—**फल**

11. जन्म = **मृत्यु** रात = **दिन** आकाश = **पाताल** बहना = **रुकना**
अमृत = **विष** सुगंध = **दुर्गंध** दु:खी = **सुखी** गद्य = **पद्य**
निज = **पर** खुला = **बन्द**

12. अशक्त = **कमजोर, दुर्बल** अपेक्षा = **आशा, आकांक्षा**
अलि = **भौंरा, भ्रमर** अम्ल = **खट्टा, तेजाब**
आँख = **नयन, चक्षु** कान्ति = **दीप्ति, चमक**
धाम = **गृह, घर** दोष = **अवगुण, द्वेष**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

2. स्वास्थ्य का रहस्य

पाठ-बोध

1. (क) (iv) 80 (ख) (i) कम खाना और गम खाना
(ग) (i) अहंकार (घ) (ii) गोपीनाथ
(ङ) (iv) सहनशीलता दिखाना (च) (ii) तलवार की धार पर चलने जैसा

2. (क) स्वस्थ, (ख) सैर, (ग) रहस्य, (घ) पच, (ङ) मन, (च) संगति, (छ) शरीर।

3. (क) यदि व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है तो वह शारीरिक रूप से भी स्वस्थ नहीं रह सकता। हम शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को ही स्वस्थ कहते हैं जबकि यह हमारी भूल है।

(ख) यदि हम क्रोध को सहन करेंगे तो हमारा मन स्वस्थ रहेगा और यदि हम कम खाएँगे तो हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा, क्योंकि कम खाना जल्दी पच जाता है। जो हमारे शरीर के लिए उत्तम है।

(ग) गम खाना बहुत कठिन कार्य है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति क्रोध को सहन करना नहीं चाहता। कभी कोई व्यक्ति क्रोध को सहन करने की कोशिश करता है, लेकिन हो नहीं पाता। इसलिए गम खाना तलवार की धार पर चलने जैसा है।

(घ) यदि इंसान किसी कार्य को करने का निश्चय कर ले तो कुछ भी असम्भव नहीं है, यदि वह चाहे तो गम भी खा सकता है और कम भी।

4. (क) लालाजी के स्वास्थ्य के दो स्तम्भ थे, कम खाना और गम खाना। इसके अतिरिक्त वे सुबह-शाम की सैर भी करते थे और दूध-घी भी इस्तेमाल करते थे।

(ख) कम खाने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, क्योंकि कम खाने से खूब भूख लगती है और भूख में भोजन का स्वाद दोगुना हो जाता है। कम खाना जल्दी पच भी जाता है।

(ग) गम खाने का अर्थ सहनशीलता से है, सहनशील व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है, उससे वह भी खुश रहता है और दूसरे भी खुश रहते हैं।

(घ) असहनशीलता और अहंकार को क्रोध की जड़ इसलिए माना गया है, क्योंकि असहनशील और अहंकारी व्यक्ति ही क्रोध करता है और क्रोध व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए विष का कार्य करता है।

(ङ) भूख में भोजन का स्वाद दोगुना हो जाता है, जब भूख लगती है, तो चने भी जलेबी जैसा स्वाद देते हैं।

(च) इस कहानी के माध्यम से कवि ने स्वस्थ रहने का रहस्य बताया है। इस कहानी में बताया गया है कि मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही अपने व्यवहार को सन्तुलित रखता है और विषम परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखता है।

5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗ (च) ✓।

भाषा-बोध

6. (क) एक वृद्ध व्यक्ति अस्सी वर्ष की आयु पार कर चुके थे।

(ख) मेरे सभी मित्र और सहयोगी वृद्ध हो चुके थे।

(ग) इतने दिनों तक लालाजी से दूर रहने का पछतावा हुआ।

(घ) भूख में भोजन स्वादिष्ट लगता है। सामान्य भोजन भी पकवान लगता है।

7. जिन्दादिली, दहलीज, कुरता, मेहरबानी, गम खाना, इस्तेमाल, शौकीन, सिटपिटा, तुनकमिजाजी, फाँकना।

8. **सम्पर्क**—लेखक को बुजुर्ग के **सम्पर्क** में आने से लाभ मिला।
अपवाद—लालाजी बूढ़े लोगों में **अपवाद** थे।
रहस्य—गम खाना मानसिक स्वास्थ्य का **रहस्य** है।
प्रत्यक्ष—लालाजी का जीवन लेखक ने **प्रत्यक्ष** देखा था।
शौकीन—कुलभूषण लड्डू का **शौकीन** है।
संकल्प—यदि व्यक्ति **संकल्प** ले तो कुछ भी कर सकता है।

9.

विशेषण	**संज्ञा**	**विशेषण**	**संज्ञा**
शान्त	**शान्ति**	**क्रोधी**	क्रोध
मौसमी	मौसम	असहनशील	**असहनशीलता**
स्वस्थ	**स्वास्थ्य**	**अधीर**	अधीरता
अहंकारी	अहंकार	तुनकमिजाज	**तुनकमिजाजी**

10. (क) गम खाना—**धैर्य रखना**
व्यक्ति को विषम परिस्थितियों में गम खाना चाहिए।
(ख) तू-तू, मैं-मैं—**अशिष्ट प्रकार से झगड़ा करना**
छोटी-छोटी बातों पर तू-तू, मैं-मैं मत करो।
(ग) कौंधना—**बिजली की तरह चमक**
एक रोशनी मेरी आँखों के सामने कौंध गई।
(घ) रहस्य—**छिपाकर किया जाने वाला**
लाला जी के स्वास्थ्य का क्या रहस्य था?
(ङ) संकल्प—**दृढ़ निश्चय**
लेखक ने गम खाने और कम खाने का संकल्प ले लिया है।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

3. पुष्प का मूल्य

पाठ-बोध

1. (क) (ii) कोयल की कूक को (ख) (i) एक माशा सुवर्ण
(ग) (iii) भगवान बुद्ध के (घ) (iv) वे उसे न जाने कितना द्रव्य देंगे।
(ङ) (i) सुदास माली ने
(च) (iii) उसे अपने चरणों की धूल की एक कणिका प्रदान करें।

2. (क) अपने सरोवर के ठीक मध्य में खिले कमल के पुष्प को देखकर सुदास माली का मन आनन्द से नाच उठा।
(ख) उसके मन में विचार आया कि पुष्पों के प्रेमी राजा आज अकाल में खिले इस कमल पुष्प को पाकर मुँह माँगा मूल्य प्रदान करेंगे।
(ग) राजपथ से निकलते हुए पुरुष ने भगवान बुद्ध के लिए पुष्प लेना चाहा और उसने प्रारम्भ में पुष्प का मूल्य एक माशा स्वर्ण देना स्वीकार किया।
(घ) सुदास ने पुष्प बेचने का विचार इसलिए त्याग दिया कि जिस भगवान बुद्ध के लिए ये भक्त लोग इतना द्रव्य खर्च करने को तैयार हैं, वह पुरुष स्वयं कितना धनवान होगा? यदि मैं स्वयं उसी के चरणों में यह पुष्प अर्पित कर दूँ तो मुझे न जाने कितना द्रव्य मिलेगा?

(ङ) सुदास भगवान बुद्ध को देख स्तब्ध रह गया, क्योंकि उसने देखा कि वट वृक्ष की छाया में पद्मासन लगाकर भगवान बुद्ध विराजमान थे। उज्ज्वल ललाट, मुख पर आनन्द की प्रभा, ओंठों से सुधा झर रही थी और नयनों से अमृत टपक रहा था। मेघों-सी धीर-गम्भीर ध्वनि इस तपस्वी के मुख से निकल रही थी।

(च) अन्त में उसने उस फूल को भगवान बुद्ध के चरणों में चढ़ा दिया।

(छ) गौतम बुद्ध ने सुदास से कहा कि हे वत्स! कुछ कहना है, कुछ चाहिए?

3. (क) फूलों की वाटिकाओं, वन और बगीचों में पेड़-पौधे ऐसे उदासीन से खड़े थे, जैसे किसी शिशु के अपने माता-पिता से दूर हो जाने पर माता-पिता निस्तब्ध से हो जाते हैं।

(ख) वह उस साधु को बिना पलकें झपकाए एकटक देख रहा था।

(ग) कमल की पंखुड़ियाँ हिल-हिलकर अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रही थीं तो ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सुदास के द्वारा किसी शुभ कार्य के सम्पन्न होने का मुहूर्त आ गया था।

4. (क) उपर्युक्त विचार सुदास के मन में तब आया जब सज्जन पुरुष और राजा इस पुष्प के लिए एक-दूसरे से दोगुना सुवर्ण खर्च करने को तैयार थे।

(ख) सुदास ने कमल-फूल राजा और दूसरे धनिक को इसलिए नहीं बेचा, क्योंकि वह भगवान बुद्ध को स्वयं पुष्प चढ़ाकर उनके द्वारा दिया हुआ अमूल्य धन पाना चाहता था।

(ग) वट वृक्ष की छाया में उसने भगवान बुद्ध को बैठे हुए देखा।

(घ) भगवान बुद्ध से उसे सुवर्ण के रूप में मूल्य नहीं मिला बल्कि उसने भगवान बुद्ध से उनकी चरणों के धूल के कुछ कण लिए।

5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓।

भाषा-बोध

6. **तत्सम**— माथा - **ललाट**   मीठा - **मधुर**   कनी - **कणिका**
सगुन - **शकुन**   मुँह - **मुख**   फूल - **पुष्प**

तद्भव—वट - **बरगद**   दश - **दस**   पूजन - **पूजा**
गीत - **गाना**   वाद्य - **बाजा**   वाणी - **वानी**

7.

'क'	**'ख'**	**सार्थक शब्द**
राज	पूर्ण	**राजपथ**
कुंज	वाद्य	**कुंजवीथी**
तुषार	दल	**तुषारकण**
मंगल	गण	**मंगलवाद्य**
कमल	पथ	**कमलदल**
भक्त	आसन	**भक्तगण**
पद्म	दारी	**पद्मासन**
स्मिता	वीथी	**स्मितापूर्ण**
दुनिया	कण	**दुनियादारी**

8. (क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिग (ग) पुल्लिग (घ) स्त्रीलिंग (ङ) पुल्लिग (च) पुल्लिग (छ) स्त्रीलिंग।

9. (क) सकर्मक (ख) सकर्मक (ग) अकर्मक (घ) सकर्मक (ङ) सकर्मक (च) अकर्मक।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

4. ईमानदारी का फल

पाठ-बोध

1. (क) (iii) (i) और (ii) (ख) (i) लिल मिलर
(ग) (ii) मधुमेह (घ) (iii) टोरंटो
(ङ) (ii) स्कारबरो में, (च) (i) एक टाँग कट गई थी।
(छ) (iii) लिफाफे को बैंक अधिकारी को सौंप दिया।

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗।

3. (क) उपर्युक्त विचार कारवास्की के मन में उठ रहे थे।

(ख) उसने लिफाफा बैंक अधिकारी को दे दिया।

(ग) उसे पैसों की आवश्यकता इसलिए थी, क्योंकि उसके पिता चल बसे थे। उसकी पत्नी भी उसे छोड़कर चली गई थी। उसका बायाँ पैर पहले की कट गया था और बढ़ते मधुमेह के कारण दाहिने पैर के कटने की भी नौबत आ गई थी। वह बहुत मुसीबत में था।

(घ) यदि वह उस लिफाफे को रख लेता तो उसकी आत्मा उसे धिक्कारती।

4. (क) कारवास्की टोरंटो में रहता था, वह बहुत मुसीबत में था। उसका बटुआ कहीं गिर गया था, उसमें से डेढ़ सौ डॉलर किसी ने उड़ा दिए थे। उस समय उसे जो निराशा हुई थी, उसे याद करके वह आज भी सिहर उठता था।

(ख) लिल मिलर ने कारवास्की की ईमानदारी और सेवाभाव को देखकर तोहफे के लिए चुना।

(ग) लिल मिलर ने स्थानीय समाचार-पत्र में एक घटना के विषय में पढ़ा था जिसमें कारवास्की ने लिफाफा बैंक अधिकारी को दिया। शायद उसी को पढ़कर लिल मिलर ने कारवास्की का चयन किया।

(घ) कारवास्की खोया-खोया सा बैठा था। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। लिल मिलर उसे देख रही थी। कारवास्की के चेहरे पर निराली मासूमियत थी और आँखों से अद्‌भुत प्रेम छलक रहा था। कुछ देर रुककर और उसे धन्यवाद देकर मिलर चली गई। मानो अभी उसका मन नहीं भरा हो, वह दोबारा कारवास्की के पास पहुँची और उसे कुछ तोहफे और दिए।

(ङ) लिल मिलर ने अन्त में कहा धन्य हैं वे, जो स्वार्थ में अन्धे नहीं होते और प्रलोभनों के आगे नहीं झुकते। प्रभु सदा उनका साथ देते हैं।

(च) छात्र स्वयं करें।

भाषा-बोध

5. (क) **उद्देश्य**—लिल मिलर।
विधेय—ने इस वर्ष भी एक ईमानदार, त्यागी और सेवाभावी व्यक्ति चुन लिया था।

(ख) **उद्देश्य**—कारवास्की।
विधेय—ने सिर झुकाकर धन्यवाद दिया।

6. अनुग्रह – **विग्रह** मधुर – **कटु** प्रेम – **घृणा**
सदा – **कभी-कभी** पुरस्कार – **तिरस्कार** ईमानदार – **बेईमान**
संयोग – **वियोग** कृतज्ञ – **कृतघ्न**

7. (क) कृतज्ञ (ख) कृतघ्न (ग) आगंतुका
(घ) विकलांग (ङ) सर्वज्ञ (च) अनभिज्ञ।

8. भगवान – **ईश्वर, देव**। अनायास – **अनीति, जुल्म**।
तोहफा – **उपहार, भेंट**। परीक्षा – **इम्तहान, परीक्षण**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

5. समय

पाठ-बोध

1. (क) (ii) समय के (ख) (i) आलस्य के कारण
(ग) (i) समय (घ) (ii) उद्योगी।

2. (क) कवि कहता है कि तुम्हारी मन की इच्छा अभी पूरी हो सकती है, यदि अभी नहीं हुई तो फिर कभी नहीं होगी। समय बीतता जा रहा है और कार्य समय पर नहीं हो पा रहे हैं।

(ख) कवि कहता है कि कार्यशील व्यक्ति को कभी समय नहीं मिलता है। परिश्रमी व्यक्ति अपने कार्य समय पर करने में ही सुख पाता है। समय को नष्ट करके कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता है।

(ग) कवि कहता है कि समय के उत्तम उपयोग से जीवनरूपी वृक्ष को पानी से सिंचाई करके पल्लवित और पुष्पित कर सकते हैं। इसी से तुम्हारा जीवन सफल हो सकता है।

3. (क) नहीं, कोई समय की समता नहीं कर सकता है।
(ख) ईश्वर का दिया हुआ अनुपम धन समय है।

(ग) व्यक्ति को एक पल को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए।

(घ) इस कविता में कवि ने समय के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। व्यक्ति के लिए वर्तमान समय ही शुभ कार्य करने का समय है। हमें हर पल का सदुपयोग करना चाहिए और किसी भी कार्य के लिए आने वाले समय की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

पाठ-बोध

4. सुसमय - **कुसमय** सुपुत्र - **कुपुत्र** सुयोग्य - **अयोग्य**
सुमति - **कुमति** सुनीति - **कुनीति** सुफल - **कुफल**

❖ सम्मोहित, सम्भावित अपव्यय, अपशब्द
सफल, सबल निर्लज्ज, निर्माण

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

क्रियाकलाप

❖ कबीरदास जी कहते हैं कि जो कार्य हमें कल करना चाहिए उसे आज ही करना चाहिए और इसी समय करना चाहिए। हमें एक पल को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए, पल-पल से ही हमारा जीवन बना है और समय के उत्तम प्रयोग से ही जीवनरूपी वृक्ष को पानी से सिंचाई करके पल्लवित और पुष्पित कर सकते हैं। इसी से हमारा जीवन सफल होता है।

❑

6. ईदगाह

पाठ-बोध

1. (क) (ii) ईद (ख) (i) बारह (ग) (iv) भिश्ती
(घ) (iii) सबील पर (ङ) (ii) चिमटा।

2. लेखक कहता है कि बहुत सुन्दर और सुखद सुबह है आज। सूर्य भी ऐसा शीतल प्रतीत होता है जैसे पूरे विश्व को ईद की शुभकामनाएँ दे रहा हो।

3. (क) ईद का त्यौहार रमजान के तीस रोजों के बाद मनाया जाता है।
(ख) ईदगाह जाने की तैयारी इसलिए हो रही है, क्योंकि आज ईद का त्यौहार है।
(ग) ईदगाह में नमाज पढ़ने के बाद बच्चे मेले में जाएँगे।
(घ) हामिद के साथ उसके दोस्त महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी जा रहे हैं।

4. (क) हामिद चार-पाँच साल का एक गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का है। उसके पास तीन पैसे हैं।
(ख) ईद के दिन बच्चे सबसे अधिक प्रसन्न इसीलिए थे, क्योंकि वे मेले में जा रहे थे।
(ग) हामिद के दोस्तों में महमूद ने सिपाही, मोहसिन ने भिश्ती, नूरे ने वकील तथा सम्मी ने खंजरी खरीदी।

(घ) अपना उपहार देखकर पहले तो अमीना नाराज हो गई, फिर उसका क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, क्योंकि उसने देखा कि बच्चे में कितना त्याग और सद्भाव है।

(ङ) छात्र स्वयं करें।

भाषा-बोध

5. ज्यादा – **अधिक** जान – **आत्मा** चीज – **वस्तु**
नजर – **देखना** खजाना – **संचित धनराशि** मजा – **आनन्द**।

6.

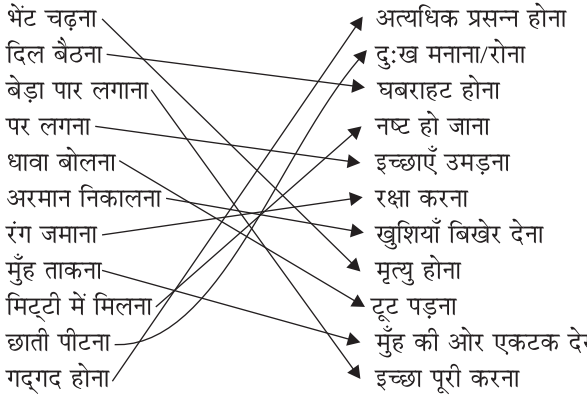

(क) बेड़ा पार कर (ख) पर लग (ग) अरमान निकाल
(घ) रंग जमा (ङ) मिट्टी में मिल।

7. सूर्य – **सूरज, रवि।** पेड़ – **वृक्ष, विटप।** पानी – **जल, नीर।**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

7. सुदूर द्वीपों में बसा भारत

पाठ-बोध

1. (क) (i) अंग्रेजी
(ख) (ii) अपनी सुदूर दक्षिणी अमेरिकी द्वीपों की यात्रा के दौरान
(ग) (iv) 'अमर चित्रकथा माला'
(घ) (i) उन्हें समझ नहीं पाते
(ङ) (iii) 100 वर्ष से अधिक।

2. (क) उसका प्रयोग नगण्य है।
(ख) बँधुआ मजदूर विश्व के अनेक भागों में ले जाए गए थे।
(ग) प्रबल इच्छा दिखलाई पड़ी।
(घ) किसी गाँव में जा रहे हों।

(ङ) सत्ता नहीं आ पाई।

3. (क) लेखक को सांस्कृतिक सम्बन्धों की भारतीय परिषद् द्वारा प्रायोजित अमेरिका महाद्वीप की यात्रा में जमैका, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम चार देशों में जाने का अवसर मिला। ये देश उन्हें रोचक लगे।

(ख) सूरीनाम में भारतीय मूल के लोगों की भाषा हिन्दी है।

(ग) अमेरिका के दक्षिणी द्वीपों के इन सभी देशों में भारतवंशी लोगों ने वहाँ के आर्थिक विकास में सौ वर्षों से अधिक समय तक अपने अथक परिश्रम और कड़ी मेहनत द्वारा महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

(घ) सांस्कृतिक सम्बन्धों की भारतीय परिषद् को भारतीय मूल के लोगों में भारत से अपने सम्बन्ध पुष्ट करने के लिए अपने सम्पर्क बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही अन्य प्रबुद्ध प्रचारकों को भी आधी दुनिया में दूर-दूर बसे इन भारतीयों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विशेष प्रयास करना चाहिए।

(ङ) भारतवंशियों ने लेखक के भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति और राजनीति के सम्बन्ध में दिए गए भाषणों को पसन्द किया।

भाषा-बोध

4. (क) यद्यपि, किन्तु (ख) इसलिए (ग) अपितु (घ) कि ।

5. (क) अगणित (ख) पखवाड़ा (ग) वारिस (घ) बन्दरगाह
(ङ) पौराणिक।

6. प्रशासनिक = **प्रशासन + इक** धार्मिक = **धर्म + इक**
पुष्पित = **पुष्प + इत** सामाजिक = **समाज + इक**
आनन्दित = **आनन्द + इत** स्वर्गीय = **स्वर्ग + ईय**
नाटकीय = **नाटक + ईय**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

8. बोध

पाठ-बोध

1. (क) (iv) बैजनाथ (ख) (iii) ठाकुर अतिबल सिंह
(ग) अयोध्या (घ) (i) पण्डित जी सबको पढ़ाते थे।
(ङ) (iii) मुंशी जी बीमार हो गए थे। (च) (ii) रेलगाड़ी में।

2. (क) **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक **'मधुबन'** से **मुंशी प्रेमचन्द** द्वारा लिखित **'बोध'** नामक पाठ से ली गई है।

व्याख्या—पण्डित जी मास्टर की नौकरी करने पर पछताते थे, कहते थे कि कहाँ आ फँसे यदि वे कहीं और नौकरी करते तो आराम से जीवन व्यतीत करते, वे सोचते थे कि और नौकरियों में ज्यादा पैसा कमाया जा सकता है।

(ख) **सन्दर्भ**—पूर्ववत्।

व्याख्या—जब पण्डित जी अयोध्या से अपने घर वापस लौटे तो उनका स्वभाव बदल गया था। वे शिक्षक के पद की अहमियत समझ गए थे। फिर उन्होंने किसी दूसरे विभाग में नौकरी में जाने की कोशिश नहीं की।

3. (क) पण्डित जी अपने अध्यापक होने पर पछताते थे। वे सोचते थे कि यदि कहीं और नौकरी करते तो उनके पास भी खर्च करने के लिए पैसे होते और आराम से जीवन व्यतीत करते।

(ख) 'अपमान के जहर को अमृत समझकर पी जाते।' यह वाक्य पण्डित जी के लिए कहा गया है, क्योंकि पण्डित जी ठाकुर और मुंशी के लड़कों को पढ़ाते थे और उन्हीं के कारण कभी-कभी पण्डित जी को दूध-दही मिल जाता था। इसी कारण पण्डित जी को उनकी कुछ बातें भी सुननी पड़ती थीं।

(ग) दरोगा जी ने एक मुसाफिर से रिश्वत ली थी और दूसरे को बिना वजह डण्डों से मारा था इसलिए मुसाफिरों ने दरोगा जी को जगह नहीं दी।

(घ) पण्डित जी उनके साथ यात्रा के लिए इसलिए तैयार हो गए, क्योंकि पण्डित जी की यात्रा का खर्चा वे दोनों करने को तैयार थे।

(ङ) डॉक्टर चोखेलाल के कथन का अभिप्राय यह था कि वह उन्हें बहुत अच्छी तरह से पहचानता था क्योंकि जब भी वह अपना लगान भरने तहसील जाता था, तो मुंशी जी अपना हक वसूल कर लिया करते थे।

(च) कृपाशंकर हाथ बाँधे सेवक की भाँति इसलिए दौड़ता था, क्योंकि वह अपने शिक्षक का सम्मान करता था। वह यह मानता था कि आज वह जो कुछ भी है अपने शिक्षकों द्वारा दिए गए ज्ञान की वजह से है।

भाषा-बोध

4.	**सर्वनाम**	**सार्वनामिक विशेषण**
	(क)	यह
	(ख) यह	.....
	(ग)	उस
	(घ) उसने	.....
	(ङ)	वह

5. पण्डित - **पण्डिताइन** धोबी - **धोबिन**
माली - **मालिन** अध्यापक - **अध्यापिका**
अभिनेता - **अभिनेत्री**।

6. पेड़ - **वृक्ष, विटप।** नेत्र - **आँख, नयन।**
शिक्षक - **अध्यापक, आचार्य**

7. विद्यार्थी, विद्यालय, विद्याविशारद्।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें ❑

9. एक मनुष्य की कामना

पाठ-बोध

1. (क) (iii) (i) और (ii) दोनों, (ख) (iv) कली,
(ग) (i) आनन्दित, (घ) वसन्त ऋतु के मनमोहक पुष्प
(ङ) (iii) सुमित्रानंदन पंत

2. मधुऋतु **के कुसुम मनोहर,**
कुसुमों की ही मधु प्रियतर
यह एक **मुकुल मानस का**
प्रमुदित, मोदित मधुमय हो।

3. (क) कवि यह प्रार्थना कर रहा है कि उसका प्रत्येक क्षण मंगलमय हो।
(ख) निर्भय में उपसर्ग है— निर्।
(ग) जीवन के दो अर्थ—(i) प्राण धारण, (ii) जिंदगी।
(घ) उपर्युक्त पद्यांश के रचयिता सुमित्रानंदन पंत हैं।

4. (क) यह एक मुकुल मानस का
प्रमुदित, मोदित मधुमय हो!
(ख) यह एक बूँद जीवन का
मोती सा सरस; सुघर हो।
(ग) मेरा प्रतिपल सुंदर हो,
प्रतिदिन सुंदर; सुखकर हो।

भाषा-बोध

5. **प्रतिपल**—मोहन **प्रतिपल** भजन करता रहता है।
प्रमुदित—राहुल, ब्रिजेश की बात सुनकर **प्रमुदित** हो गया।
तन्मय—विराट **तन्मय** होकर मैच देख रहा है।
मधुमय—सभा में संगीत मधुमय था।
मंगलमय—यह दिन आपके लिए **मंगलमय** हो।

6. सुंदर – **सुंदरता** लघु – **लघुता**
मधुर – **मधुरता** अमर – **अमरता**

7. कुसुम – **फूल, पुष्प** सागर – **नदीश, जलधाम**
जल – **पानी, नीर** नव – **नवीन, आधुनिक**

8. सुंदर – **कुरूप** सरस – **नीरस**
लघु – **दीर्घ** संशय – **असंशय**
जीवन – **मृत्यु** स्थिर – **अस्थिर**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

10. वीरता का सम्मान

पाठ-बोध

1. (क) (ii) तक्षशिला का राजा आम्भी (ख) (i) देशद्रोही
(ग) (i) आम्भी के लिए (घ) (iii) राजा पुरु ने
(ङ) (iii) उसे बन्धनमुक्त कर दिया।

2. (क) आम्भी ने, सिकन्दर से। (ख) पुरुराज ने, आम्भी से।
(ग) सिकन्दर ने, पुरुराज से। (घ) पुरुराज ने, सिकन्दर से।
(ङ) पुरुराज ने, सिकन्दर से।

3. (क) **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'मधुबन' के 'वीरता का सम्मान' पाठ से ली गई है।

आशय—वीर पुरुष के लिए बन्धन में रहना या मृत्यु प्राप्त करना और विजयी होना या पराजित होना बराबर होता है, क्योंकि श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि मनुष्य को केवल कार्य करना चाहिए उसे फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

(ख) **सन्दर्भ**—पूर्ववत्।

आशय—व्यक्ति को अपना कार्य नि:स्वार्थ भाव से करना चाहिए, उसे फल की इच्छा कभी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि व्यक्ति अपने हाथ से सिर्फ कर्म कर सकता है। कर्म का फल प्रदान करना किसी दूसरी शक्ति के हाथ में है।

(ग) **सन्दर्भ**—पूर्ववत्।

आशय—भारत में अलग-अलग जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं, इस विभिन्नता के कारण उनके विचारों में मतभेद हो सकता है, परन्तु वास्तव में वे सब भारतवंशी ही हैं।

(घ) **सन्दर्भ**—पूर्ववत्।

आशय—सत्य और प्रिय लगने वाले वचन जो हमारे हित में हों बहुत कम होते हैं, क्योंकि सत्य वचन सामान्यत: कटु होते हैं।

4. (क) सिकन्दर यूनान का राजा था। उसने अन्य राज्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए भारत पर आक्रमण किया।

(ख) पुरुराज के बन्दी बनाए जाने पर आम्भी ने व्यंग्य से कहा—अरे पुरु! तुम बन्दी बना लिए जाने पर भी अपने को भारत-वीर कह रहे हो। ऐसा कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आ रही है।

(ग) बन्धन में रहने पर भी पुरुराज का सिर गर्व से इसलिए उठा हुआ था, क्योंकि उनके अनुसार वीर पुरुष के लिए बन्धन-मरण अथवा जय-पराजय सब बराबर हैं। वह इस बात से प्रसन्न था कि उसने बाहरी आक्रमण के विरुद्ध अपना कर्त्तव्य पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाया था।

(घ) जब सिकन्दर ने पुरु से पूछा कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए तो पुरु ने उत्तर दिया कि जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। यह सुनकर सिकन्दर ने पुरु को मुक्त कर दिया और उसे अपना मित्र बना लिया।

भाषा-बोध

5. आन्तरिक – **बाह्य** असम्भव – **सम्भव** दुर्लभ – **सुलभ**
कठिन – **सरल** प्रत्यक्ष – **अप्रत्यक्ष** देशद्रोह – **देशप्रेम**
विषाद – **हर्ष** प्रस्थान – **आगमन** उन्नति – **अवनति**
परिश्रम – **विश्राम**

6. विचार – **वैचारिक** सम्प्रदाय – **साम्प्रदायिक** अनुग्रह – **अनुग्रहीत**
अन्तर – **आन्तरिक** अर्पण – **अर्पित** सिंचाई – **सिंचित**
दु:ख – **दु:खित** प्रेरणा – **प्रेरित** निश्चय – **निश्चित**
नियन्त्रण – **नियन्त्रित**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

11. मेरा भाई

पाठ-बोध

1. (क) (ii) मुस्तफा लॉज, (ख) (iv) रामपुर के,
(ग) (i) बर्लिंग्टन होटल, (घ) (ii) सगे चचेरे भाई का
(ङ) (i) वह गहन अपराध भावना से क्षुब्ध हो गई।

2. (क) ईद के मौके पर हामिद भाई जो सेवइयों का कटोरा शिवानी को देते, उसे घर-घर के स्वाद, रंग, रस की सेवइयों की सौगात इसलिए कहा गया है, क्योंकि हामिद के लिए वह सेवईं विभिन्न घरों से आती थीं और उसी में से वह एक कटोरा सेवई अपनी बहन शिवानी के लिए सहेजकर लाते थे।

(ख) हामिद भाई और लेखिका में भाई-बहन का सम्बन्ध तब से था जब वे पड़ोसी थे। उस समय लेखिका 8 या 10 वर्ष की रही होगी। हामिद की कोई बहन नहीं थी इसलिए वह लेखिका को अपनी बहन मानते थे।

(ग) साहबजादा हामिद विलायत से लौटे थे। उनके पास चमचमाती मॉरिस गाड़ी थी। उनके ड्राइवर की वरदी भी ठसकेदार रहती थी। उनके सूट फेल्पस से सिलकर आते थे। वे थोड़ी देर के लिए भी कहीं जाते तो सरकारी चोबदार उनके जूते को चमकाने के लिए चमड़े के बैग में पॉलिश और ब्रुश लिए उनके साथ रहता था।

(घ) हामिद ने कभी विवाह न करने का व्रत इसलिए लिया था, क्योंकि जिससे वे विवाह करना चाहते थे उसने उन्हें धोखा दिया था। वह उन्हें सदैव यह उम्मीद दिलाती रही कि वह उन्हीं से विवाह करेगी, लेकिन वह किसी और से विवाह करके पाकिस्तान चली गई।

(ङ) जीवन के अन्तिम दिनों में हामिद द्रोही इसलिए हो गए थे, क्योंकि उनके अपनो ने उन्हें बहुत दु:ख दिए थे। जिन भतीजों को उन्होंने नैनीताल के नामी स्कूल में पढ़ाया था उन्हें पर लग गए थे और वे उड़ गए थे। सभी ने उनसे अपना मतलब सिद्ध किया था और उन्हें छोड़ दिया था। इसी से दु:खी होकर उनके मन में अपने लोगों के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न हो गई थी।

3. (क) लेखिका के पति की हालत देखकर हामिद ने कहा कि हिम्मत मत हार, यदि हिम्मत हारेगी तो काम नहीं चलेगा, इसलिए तुम्हें हिम्मत करके आगे बढ़ना है।

(ख) हामिद भाई से जब उनके अपने लोगों ने स्वार्थ सिद्ध कर लिया तो उन्होंने हामिद भाई को ठुकरा दिया और उनसे दूर चले गए। इन्हीं बातों से हामिद भाई का मन दु:खी रहता था और वे अपने अन्तिम दिनों में अपने लोगों के लिए विद्रोही हो गए थे।

(ग) जो लोग अपनी मृत्यु से नहीं डरते, उन्हें कभी तड़प-तड़प कर नहीं मरना पड़ता। उनकी मृत्यु शान से होती है और ऐसा लगता है; जैसे मौत स्वयं उन्हें अपने कन्धे पर बैठाकर ले जा रही हो।

4. छात्र स्वयं पढ़ें।

5. दुर्लभ - **सुलभ** कष्ट साध्य - **सुसाध्य**
अवसान - **प्रारम्भ** मुमकिन - **नामुमकिन**

6. **अँगूठा दिखाना** - स्वार्थी व्यक्ति अपना काम सिद्ध करके हामिद को **अँगूठा दिखाए गए**।

माथा ठनकना—पति की खराब हालत देखकर लेखिक का **माथा ठनक गया।**

पंख उग आना—कम मेहनत करके अधिक धन प्राप्त कर लेने वाले लोगों के **पंख उग आते** हैं।

आग का दरिया बनना—प्रभुता होने पर सामान्य व्यक्ति का स्वभाव भी **आग के दरिया** के समान हो जाता है।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

क्रियाकलाप

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

12. नीलकंठ

पाठ-बोध

1. (क) (ii) शंकरगढ़ से,
(ख) (iii) नीलमणि के समान
(ग) (i) खरगोश के शिशु को,
(घ) (iii) नीलकंठ
(ङ) (iv) महादेवी वर्मा।

2. (क) बड़े मियाँ चिड़ियावाले ने, लेखिक से।
(ख) लेखिका ने, बड़े मियाँ चिड़ियावाले से।
(ग) लेखिका ने, सब से।
(घ) बड़े मियाँ चिड़ियावाले ने, लेखिका से।

3. (क) बड़े मियाँ चिड़ियावाले थे, जो पक्षियों का व्यापार करते थे।
(ख) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का नाम नीलकंठ और लेखिका का नाम महादेवी वर्मा है।
(ग) 'मेरे' शब्द लेखिका के लिए आया है।
(घ) मोर के पंजों से दवाई बनती है।

4. (क) जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों ने पहले से रहने वाले पक्षियों के बीच कुतूहल जगा दिया। कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे! तोते भली-भाँति देखने के लिए एक आँख बन्द करके उनका परीक्षण करने लगे।
(ख) नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम नीलकंठ रखा गया और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नाम राधा रखा गया।
(ग) मोर का चिड़ियाघर के निवासी जीव-जन्तुओं का सेनापति और संरक्षक होने का पता इसलिए चलता है, क्योंकि सुबह को ही वह सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता, जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की नहीं और वह अपने तीखे चंचु-प्रकार से उसे दंड देने दौड़ पड़ता। सजा के समान ही उसका प्रेम भी असाधारण था। वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लम्बी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔवल-सा खेलते रहते थे।
(घ) मोर के अटूट स्नेह का प्रमाण एक घटना से मिला कि एक दिन एक साँप जाली के अन्दर पहुँच गया, एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका पिछला आधा हिस्सा मुँह में दबा रखा था, खरगोश की हल्की चीं-चीं की आवाज सुनकर मोर अपने पूँछ-पंख समेटकर सर्र से एक पल में नीचे आ गया। उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया, पकड़ ढीली होते ही खरगोश का बच्चा मुँह से निकल गया।
(ङ) विदेशी महिलाओं ने मोर को 'परफैक्ट-जेंटलमैन' की उपाधि दी, क्योंकि वह पंखों का सतरंगी मण्डलाकार छाता तानकर नृत्य की मुद्रा में खड़ा हो जाता था और अतिथि अपने प्रति सम्मान प्रदर्शन समझकर प्रसन्न हो जाते थे।

भाषा-बोध

5. (क) प्रयाग में नखासकोना कैसा स्थान रखता है?
(ख) बड़े मियाँ ने मोर के जोड़े को कितने रुपये में खरीदा था?
(ग) मोर का क्या नाम था?

(घ) जाली के भीतर कौन पहुँच गया?

(ङ) खरगोश किसकी पकड़ में आ गया?

6. गंध – **सुगंध** रंग – **बेरंग** फल – **सफल** ज्ञान – **अज्ञान**

7.

नया–नया आया हुआ	**नवागंतुक**
जिसे दिलासा दिया गया हो	**आश्वस्त**
बिना हिले–डुले	**निश्चेष्ट**
हिंसा करने वाला	**क्रूर**
चिड़िया मारने वाला	**चिड़ीमार**
जो टेढ़ी–मेढ़ी हो	**वक्राकार**
सेना का पति	**सेनापति**

8.

जंतु	**जंतुओं**	आँख	**आँखें**
खरगोश	**खरगोशों**	बच्चा	**बच्चे**
वृक्ष	**वृक्षों**	सेनापति	**सेनापतियों**
पिंजड़ा	**पिंजड़ों**	अतिथि	**अतिथियों**
नवागंतुक	**नवागंतुकों**	मंजरी	**मंजरियाँ**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

13. सवैये

पाठ-बोध

1. (क) (i) यमुना नदी के किनारे कदम्ब की डाल पर।

(ख) (iii) कौआ (ग) (iv) इन सभी को (घ) (ii) गुंजा की।

2. (क) पसु, नन्द। (ख) कुण्डल, बनमाल। (ग) अँगना, पैंजनि।

(घ) पितम्बर, ग्वारन। (ङ) मुरलीधर, अधरान।

3. (क) कवि रसखान कहते हैं कि यदि अगले जन्म में मुझे पत्थर का रूप मिले तो मैं उसी पहाड़ का पत्थर बनना चाहूँगा, जिसे भगवान कृष्ण ने इन्द्र के प्रकोप से गोकुलवासियों को बचाने के लिए अपनी छोटी अँगुली पर उठाया था।

(ख) इस पंक्ति में कवि रसखान कहते हैं कि भगवान कृष्ण की सुन्दर छवि का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके सौन्दर्य के सम्मुख करोड़ों कामदेवों का सौन्दर्य भी तुच्छ है।

(ग) इस पंक्ति में कवि कहता है कि सम्पूर्ण ब्रजवासी श्रीकृष्ण के सम्मुख किसी की मार्यादा का पालन नहीं करते। ऐसा प्रतीत होता है कि वे श्रीकृष्ण के हाथों बिके हुए हैं।

(घ) इस पंक्ति में गोपियाँ कहती हैं कि हे माँ! श्रीकृष्ण के मुख की मुस्कान इतनी सुन्दर है कि सँभाली नहीं जाती है। भाव यह है कि गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुस्कराहट के वश में हैं और उसके अवलोकन से स्वयं को रोक नहीं पातीं।

(ङ) इस पंक्ति में कवि कृष्ण की मुरली की धुन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ब्रज की गोपियों के कान में जैसे ही कृष्ण की मुरली की आवाज सुनाई देती है, वह अपनी लोक-लज्जा छोड़कर अथवा परिवार की मर्यादा का त्याग करके कृष्ण के पास दौड़ती हुई चली जाती हैं।

4. (क) रसखान श्रीकृष्ण के बालरूप की उपासना करते हैं। वे चाहते हैं कि उनका पुर्नजन्म जिस भी रूप में हो, उसी स्थान पर हो जहाँ श्रीकृष्ण का बचपन व्यतीत हुआ था। इसलिए पक्षी के रूप में जन्म होने पर वे यमुना के किनारे कदम्ब के डाल पर बसेरा करना चाहते हैं।

(ख) कृष्ण के हाथ से रोटी छीनकर उड़ जाने वाला कौवा कवि को इसलिए भाग्यशाली प्रतीत होता है, क्योंकि वह ईश्वर का प्रसाद साक्षात् ईश्वर के हाथ से ही प्राप्त कर रहा है।

(ग) श्रीकृष्ण मुरली बजाकर ब्रजवासियों के ऊपर जादू करके सबके हृदय में समा गए। सभी ब्रजवासी उनके हाथ बिके से प्रतीत होते हैं।

(घ) एक गोपी अपने को कृष्ण की मुस्कराहट और मुरली की तान के प्रभाव से स्वयं को बचा पाने में असमर्थ समझती है।

(ङ) अपनी सखी के कहने पर गोपी मोर पंख लगाने को, गले में गुंजा के फूलों की माला पहनने को, पीताम्बर ओढ़ने को और लकुटी लेकर ग्वाल बालों के संग घूमने को तैयार है, लेकिन वह श्रीकृष्ण की मुरली को होठों पर लगाने से मना करती है।

भाषा-बोध

5. समाइ - **बिकाई** बजैहै - **गैहे** लाजति - **भाजति**
फिरोगीं - **पहिरौंगी** ग्वारन - **मँझारन** कछोटी - **चोटी**

6. (i) कालिंदी-कूल कदम्ब की डारन। (ii) वारत काम कला निज कोटि।
(iii) कोऊ न काहू की कानि करै। (iv) सिगरो ब्रज बीर, बिकाई गयौ है।
(v) काल्हि कोऊ कितनौ समुझैहै। (vi) कल कानन कुण्डल मोरपखा।

7. धेनु - **गाय, सुरभि।** गिरि - **पहाड़, पर्वत।**
हरि - **भगवान, ईश्वर।** कर - **हाथ, हस्त।**

8. पुरन्दर-धारन, कालिंदी-कूल, हरि-हाथ, माखन-रोटी, मुसकानि-तरंग।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

14. संगीत का प्रतिफल

पाठ-बोध

1. (क) (iii) तीन (ख) (iv) उपर्युक्त सभी (ग) (iii) दो कौड़ी का भिखमंगा।
(घ) (iii) आपको विनम्र श्रोता बनकर उस साधु के पास जाना चाहिए।

2. (क) संगीतज्ञ ने, राजा से। (ख) संगीतज्ञ ने, राजा से।
(ग) संगीतज्ञ ने, साधु से। (घ) राजा ने, साधु से।

3. (क) **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'मधुबन' के 'संगीत का प्रतिफल' नामक पाठ से ली गई है।
आशय—मन्त्री जी ने राजा से कहा कि इस समय माँगने वाले आप हैं, क्योंकि आप साधु से संगीत माँग रहे हैं और देने वाला साधु है इसलिए आपको उसके पास जाना चाहिए।

(ख) **सन्दर्भ**—पूर्ववत्।
आशय—संगीतज्ञ राजा से कहता है कि वास्तविक संगीत उचित समय पर स्वयं ही उत्पन्न होता है। वह किसी के कहने पर उत्पन्न नहीं किया जाता।

(ग) **सन्दर्भ**—पूर्ववत्।
आशय—पूर्णिमा के चन्द्रमा की किरणें इतनी शीतल होती हैं कि वे शारीरिक थकान को उसी प्रकार दूर कर देती हैं जैसे शीतल जल में स्नान करने से थकावट दूर हो जाती है।

4. (क) राजा ने अपने अनुचरों द्वारा साधु को उसका संगीत सुनने के लिए बुलवाया।
(ख) साधु ने संगीत सुनाने के लिए राजा के पास जाने से इसलिए इनकार कर दिया, क्योंकि उसके अनुसार उत्तम संगीत कभी-कभी संयोग से ही बनता है। वह जानता था कि प्रयत्न से पैदा किया गया संगीत राजा को प्रसन्न नहीं करेगा।
(ग) राजा के अनुचरों की दृष्टि में वह साधु मूर्ख था जो कि राजा को संगीत सुनाने और मुँहमाँगा पुरस्कार प्राप्त करने के अवसर को गवाँ रहा था।
(घ) साधु का निर्णय सुनकर राजा ने क्रोध में कहा कि दो कौड़ी के भिखमंगे का यह साहस! मैं कल ही दो सैनिक भेजूँगा, जो उस गधे को बाँधकर यहाँ ले आएँगे।
(ङ) मन्त्री की दृष्टि में याचक राजा तथा दाता साधु था।
(च) वीणा की झंकार और राग का गलत अलाप सुनकर साधु झोंपड़ी से बाहर निकल आया। उसने वीणा को अपने हाथ में लिया और संगीतकार को राग निकालने की सही तरकीब बताने लगा।
(छ) राजा ने साधु को संगीत का कुछ भी पुरस्कार नहीं दिया। राजा ने कहा कि इन आनन्द के क्षणों में मेरा सारा राज्य भी तुच्छ है। मेरा अहंकार भी गल गया है इतना कहते ही राजा की आँखें भर आईं और लुढ़कर दो मोती साधु के पैरों पर जा पड़े।

भाषा-बोध

5. धर्मज्ञ—**धर्म को मानने वाला।**
विशेषज्ञ—**किसी वस्तु या विषय को विशेष रूप से जानने वाला।**
राजनीतिज्ञ—**राजनीति को जानने वाला।**
सर्वज्ञ—**सबकुछ जानने वाला।**

6. (क) आपका सौभाग्य है महात्मा जी जो राजा आपका संगीत सुनना चाहते हैं।
(ख) जब राजा ने साधु का निर्णय सुना तो वह क्रोध से लाल हो उठा।

(ग) वह साधु अवश्य है, किन्तु आप उसे भिखमंगा नहीं कह सकते।

(घ) राजा ने तुरन्त मामूली कपड़े पहन लिए और नंगे पैर उस संगीतज्ञ के साथ चल पड़ा।

(ङ) कोई ऐसी युक्ति सोचिए जिससे हम साधु का संगीत सुन सकें।

7. **निहाल कर देना**—राहुल ने अपनी जायदाद का हिस्सा एक स्कूल को दान कर उसके प्रधानाचार्य को निहाल कर दिया।

हाथ से गँवा देना—देर से घर पहुँचने के कारण विराट ने खाना खाने का आखिरी मौका भी हाथ से गँवा दिया।

क्रोध से लाल हो जाना—रोहित ने मोहन से अपने रुपये माँगे तो मोहन का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।

8. (क) चन्द्रमा—**शशि, राकेश, इन्दु।** (ख) रात्रि—**रजनी, निशा, रैन।**
(ग) सूर्य—**भानु, प्रभाकर, भास्कर।** (घ) राजा—**नरेश, नृप, भूपति।**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

15. पेड़-पौधे और मानव जीवन

पाठ-बोध

1. (क) (i) स्वच्छ, (ख) (iii) बढ़ती जनसंख्या,
(ग) (i) वृक्षों की सुरक्षा, (घ) (ii) तू बी शिवेत
(ङ) (iv) इनमें से कोई नहीं।

2. प्रस्तुत गद्यांश का भाव यह है कि पृथ्वी को हरा-भरा बनाने के लिए युवाओं की विशेष आवश्यकता है। विद्यार्थियों को वृक्षारोपण में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए और अधिक-से-अधिक पेड़ लगाने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जन्मदिवस पर एक पेड़ लगाना चाहिए। ऐसा करने पर कुछ ही वर्षों में भारत इतना हरा-भरा और स्वच्छ वातावरण वाला हो जाएगा कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि पेड़ लगाना और उसकी देखभाल करना उस पर उपकार नहीं है बल्कि यह हमारे लिए और आने वाली पीढ़ी तथा उनके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

3. (क) मनुष्य प्राचीनकाल से पूरी तरह प्रकृति पर ही आश्रित रहा है। हमारे पूर्वजों ने पेड़-पौधों को जीवन का हिस्सा माना और उसकी उपयोगिता को भी पहचाना। यही कारण है कि उन्होंने प्रकृति से नाता जोड़ा और तालमेल बनाए रखा।

(ख) बढ़ती आबादी और आधुनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों को बड़ी बेरहमी से काटा गया जिसके कारण मौसम चक्र बदल गया है।

(ग) मौसम-चक्र में परिवर्तन के कारण हमें भूकम्प, प्रदूषण, बाढ़ आदि दुष्परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

(घ) बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकता; जैसे—आवास, भोजन पकाने के लिए ईंधन आदि की पूर्ति के लिए जंगलों का सफाया किया जा रहा है।

(ङ) वन सम्पदा के विस्तार के लिए वन विकास निगम स्थापित किए गए हैं, प्रत्येक राज्य में जीव-जन्तुओं और वृक्षों की प्रजातियों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्यों की स्थापना की जा रही है। नगरों में स्थान-स्थान पर हरित पट्टियाँ बनाई जा रही हैं। उनमें तरह-तरह के वृक्ष रोपे जा रहे हैं।

(च) भारतीय संस्कृति में वृक्षों के महत्त्व को समझा गया है, क्योंकि हमारे पौराणिक ग्रन्थों में प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों की पूजा का वर्णन मिलता है। हमारे देश में तुलसी, पीपल, बरगद आदि की आराधना आज तक की जाती है। इस तथ्य को ऋषि-मुनियों ने प्राचीनकाल में ही जान लिया था कि वृक्षों के अभाव में मानव अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती। यही कारण था कि घर के आँगन में ही तुलसी, नीम आदि के वृक्ष लगाए जाते थे। देवालयों में बरगद, पीपल, बेल, आम आदि के वृक्ष लगाए जाते थे। धार्मिक अनुष्ठानों में आम, अशोक, केले आदि के पत्तों का प्रयोग किया जाता था।

(छ) आज से हजारों वर्ष पूर्व हमारे आयुर्वेद-ज्ञाताओं ने विभिन्न वृक्षों, पौधों, जड़ी-बूटियों के गुणों और विशेषताओं का अध्ययन किया तथा अनेक ग्रन्थ लिखे। अपने आचार्य के कहने पर प्रसिद्ध वैद्यराज जीवक किसी ऐसी वनस्पति की खोज में निकले जिसमें औषधीय गुण न हों, परन्तु वह असफल रहे। इससे पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों का महत्त्व स्पष्ट होता है।

(ज) आधुनिक विज्ञान की देन प्लास्टिक से तो प्रकृति को भयंकर खतरा उत्पन्न हो गया है। साधारणत: कूड़ा-कचरा तो समय के साथ मिट्टी में मिल जाता है, परन्तु प्लास्टिक वर्षों तक ज्यों-की-त्यों मिट्टी में पड़ी रहती है। यह पेड़-पौधों के लिए हानिकारक होती है और इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है।

4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ (च) ✗ (छ) ✓।

भाषा-बोध

5. वातावरण – **वात + आवरण**
परम्परागत – **परम्परा + आगत**
देवालय – **देव + आलय**
अभयारण्य – **अभय + अरण्य**
कीटाणु – **कीट + अणु**
वृक्षारोपण – **वृक्ष + आरोपण**

6. सघन – **स + घन**
सुरम्य – **सु + रम्य**
प्रदूषित – **प्र + दूषित**
सहचर – **सह + चर**
दुष्प्रभाव – **दुः + प्रभाव**
प्रमुख – **प्र + मुख**
असंख्य – **अ + संख्य**
अविकसित – **अ + विकसित**
सचेत – **स + चेत**
दुर्लभ – **दुः + लभ**

7. वृक्ष – **पेड़, विटप**
विश्व – **संसार, जगत**
धरती – **पृथ्वी, भूमि**
जंगल – **वन, अरण्य**
मित्र – **दोस्त, सखा**
नाता – **सम्बन्ध, रिश्ता**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

क्रियाकलाप

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

16. पुरस्कार

पाठ-बोध

1. (क) (iv) आकाश में (ख) (i) इंद्रदेव की
(ग) (i) मगध (घ) (i) अरुण (ङ) (iii) जयशंकर 'प्रसाद'।

2. (क) मधुलिका ने कहा कि पितामहों की भूमि बेचना मेरे लिए अपराध है।
(ख) 'अबोध' शब्द मधुलिका के लिए आया है।
(ग) राजा ने मधुलिका को जमीन के बदले पुरस्कार दिया, लेकिन मधुलिका ने जमीन बेचना अपराध बताकर राजा की कृपा का तिरस्कार किया।
(घ) मधुलिका की भूमि कौशल नरेश खरीदना चाहता था।

3. (क) एक दिन के लिए महाराज किसान बन इंद्रदेव की पूजा कर हल जोतते थे। कौशल का यह उत्सव बहुत प्रसिद्ध था।
(ख) मधुलिका ने स्वर्ण मुद्राओं की थाली सिर से लगा ली, किन्तु साथ ही उसमें रखी स्वर्ण मुद्राओं को महाराज पर न्यौछावर करके बिखेर दिया।
(ग) मधुलिका ने राजकुमार अरुण की मदद इसलिए की, क्योंकि राजकुमार उसको उसकी जमीन वापस दिलाने को बोल रहा था। मधुलिका राजकुमार से प्रेम भी करने लगी थी।
(घ) राजकुमार अरुण मधुलिका को कौशल के सिंहासन पर अपनी रानी बनाकर बिठाने का प्रस्ताव देता है। मधुलिका चौंक उठती है और सोचने लगती है मगध कौशल का शत्रु है। शत्रु की विजय! ''नहीं, नहीं!'' नरेश ने कहा था यह वीर सिंहमित्र की कन्या है। इस भावना से प्रेरित होकर मधुलिका ने सेनापति को सूचना दी।
(ङ) छात्र स्वयं करें।
(च) मधुलिका ने पुरस्कार में प्राणदंड माँगा।

4.

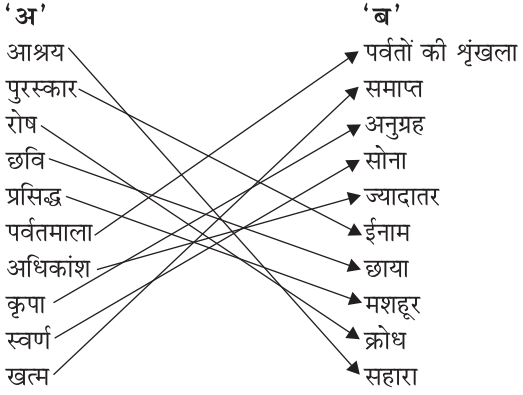

5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✗ (छ) ✓।

भाषा-बोध

6. **रेफ र** र्‍—पर्वतमाला, सौंदर्य, कार्य, स्वर्ण, विसर्जित, प्रार्थी, वर्ष, वर्षा, आश्चर्य, प्रार्थना आदि।

पदेन र ्र—प्रसिद्ध, इंद्रदेव, प्रधान, मुद्राएँ, निद्रा, अनुग्रह, प्रार्थी, विद्रोही, प्रार्थना, शीघ्र, आदि।

7. उत्सव – **पर्व, समारोह।** रात्रि – **निशा, रात।**

पथिक – **पंथी, राही।** नरेश – **धराधीश, महीपति।**

8. बाहुबल – **बाहों का बल।** सेनापति – **सेना का पति।**

अश्वारोही – **अश्व पर आरोही।** प्राणदंड – **प्राणों का दंड।**

9.

राजकुमार – **राजकुमारी**	देव – **देवी**
मालिक – **मालकिन**	दास – **दासी**
युवक – **युवती**	बंदी – **बंदिनी**
कुमार – **कुमारी**	मंत्री – **मंत्री**
महाराज – **महारानी**	वृद्ध – **वृद्धा**
राजा – **रानी**	विद्रोही – **विद्रोही।**

10. (क) में, (ख) के, (ग) में, ने, (घ) के, में।

11.

दंड	**पुरस्कार**	शत्रु	**मित्र**
रात्रि	**दिन**	इच्छा	**अनिच्छा**
समाप्त	**आरम्भ**	धीर	**अधीर**
रक्षक	**भक्षक**	सत्य	**असत्य**
सुख	**दुःख**	स्वीकार	**अस्वीकार**
आदेश	**प्रार्थना**	उत्साह	**निरुत्साह।**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑